International Journal for Innovative Engineering and Management Research
PEER REVIEWED OPEN ACCESS INTERNATIONAL JOURNAL
www.ijiemr.org

भारत मे हिन्दी समाचार पत्रों के उद्भव का अध्ययन

CANDIDATE NAME = ANUJ KUMAR SHARMA
DESIGNATION = RESEARCH SCHOLAR SUNRISE UNIVERSITY ALWAR
GUIDE NAME = DR. NARESH KUMAR
DESIGNATION = ASSOCIATE PROFESSOR
SUNRISE UNIVERSITY ALWAR RAJASTHAN

सारांश

अध्ययन में प्रमुख हिंदी दैनिक समाचार पत्रों के संपादकों सहित कुछ प्रमुख मीडिया व्यक्तियों के साक्षात्कार भी शामिल हैं, जो प्रिंट मीडिया जगत में मूल्यवान अंतर्दृष्टि प्रदान करने के साथ-साथ जनता के विचारों की पुष्टि करते हैं। ये विशेषज्ञ हिंदी प्रिंट मीडिया के उज्ज्वल भविष्य की भी कल्पना करते हैं। वे समाचार पत्रों द्वारा अपनाई गई विपणन रणनीतियों के पक्ष में नहीं हैं, लेकिन फिर भी उन्हें अधिक पाठक प्राप्त करने के लिए समाचार पत्रों के अभियानों का एक अनिवार्य हिस्सा मानते हैं। हिंदी प्रिंट मीडिया के कारपोरेटीकरण ने इस माध्यम के स्वरूप को भी बदल दिया है। इन समाचार पत्रों द्वारा ग्राहकों को संतुष्ट रखते हुए लोगों की मांगों को पूरा किया जाता है। प्रिंटिंग प्रेस भारत में मुद्रित समाचारों के आगमन से लगभग 100 वर्ष पहले की बात है। 1674 में पहला मुद्रण उपकरण बंबई में स्थापित किया गया था, उसके बाद 1772 में मद्रास में स्थापित किया गया था। तब से भारतीय मीडिया का विकास विकासात्मक कठिनाइयों से भरा हुआ है; अशिक्षा, औपनिवेशिक बाधाएं और दमन, गरीबी और उदासीनता समाचार और मीडिया में रुचि को विफल कर रही है। "भारत में समाचार पत्र का इतिहास राजनीतिक इतिहास के साथ गहराई से उलझा हुआ है।"

मुख्यशब्द:- हिन्दी समाचार पत्र, हिंदी प्रिंट मीडिया, औपनिवेशिक बाधाएं

प्रस्तावना

भारत में पहला अंग्रेजी भाषा का समाचार पत्र जेम्स हिक्की का बंगाल गजट था, जिसे 1780 में लॉन्च किया गया था। बंगाल गजट और भारत गजट के बाद कलकत्ता गजट आया, जो बाद में सरकार का "अपने सामान्य आदेश बनाने का माध्यम" बन गया। उसके बाद आधी सदी से भी कम समय में, भारत ने उनके नक्शेकदम पर चलते हुए कई समाचार प्रकाशन देखे। नाइट जैसे अंग्रेजों द्वारा स्थापित उन दिनों के कुछ अंग्रेजी अखबारों ने भारत में नौकरशाही की मनमानी, स्कूल की किताबों में भारतीय संस्कृति के अपमानजनक तरीके, कर प्रणाली आदि की आलोचना करने में ब्रिटिश राज के प्रेस की बराबरी कर ली। , और भारतीय विद्रोह पर रिपोर्टिंग में पूर्वाग्रह के

खिलाफ भी बात की। बॉम्बे हेराल्ड, द स्टेट्समैन इन कलकत्ता और मद्रास मेल और द हिंदू, मद्रास में कई अन्य प्रतिद्वंद्वियों के साथ, भारत और उसके लोगों की महानगरीय आवाज का प्रतिनिधित्व करते थे। जहां स्टेट्समैन ने अंग्रेजी शासकों की आवाज उठाई, वहीं द हिंदू दक्षिण में देशभक्ति का प्रतीक बन गया। द हिंदू की स्थापना मद्रास मेल के जवाब में मद्रास में हुई थी। देशभक्तिपूर्ण आंदोलन औपनिवेशिक क्रूरता के अनुपात में बढ़े और सूचना प्रसार का माध्यम स्वतंत्रता संग्राम का एक उपकरण बन गया। आज़ादी की लड़ाई में बीसवीं सदी में पत्रकारों ने पेशेवर और राष्ट्रवादी के रूप में दोहरी भूमिका निभाई।

आज के कई प्रमुख अंग्रेजी राष्ट्रीय दैनिक समाचार-पत्र स्वतंत्रता-पूर्व युग में प्रचलन में आये। वे ज्यादातर सुधारवादी विचारधारा वाले युवा भारतीयों के दिमाग की उपज थे जिनका उद्देश्य अंग्रेजों की शोषणकारी प्रकृति के बारे में जागरूकता पैदा करना था। उस समय के कई स्वतंत्रता सेनानियों और समाज सुधारकों के पास समाचार पत्र थे, जिनमें से प्रत्येक ने एक उद्देश्य के लिए जोर दिया और एक मामला बनाया। इसके साथ ही क्षेत्रीय भाषा के समाचार पत्रों का भी उदय हुआ। ये लोगों से उनकी मातृभाषा में बात करते थे और इसलिए, उनके साथ बेहतर तरीके से जुड़ते थे।

स्वतंत्रता के बाद, क्षेत्रीय और अंग्रेजी दोनों भाषा के समाचार पत्रों का क्षेत्र और प्रभाव में विस्तार जारी रहा। अंग्रेजी अखबार, जिनका स्वामित्व अब पूरी तरह से भारतीय शेयरधारकों के हाथों में चला गया है, ज्यादातर बड़े शहरों और प्रमुख कस्बों में केंद्रित हैं। इसका कारण ग्रामीण क्षेत्रों में अंग्रेजी की सीमित पहुंच थी। स्थानीय समाचारों के प्रकाशन और लोकप्रियता, विशिष्ट उपभोक्ताओं के लिए अपने उत्पादों का विज्ञापन करने में अवसर देखने वाले प्रायोजकों और राज्य सरकारों द्वारा वित्त को बढ़ावा देकर हिंदी प्रेस को बढ़ावा देने के कारण इन क्षेत्रों में हिंदी भाषा प्रेस अधिक लोकप्रिय थी। इसके अलावा, स्वतंत्रता के बाद समाज पर व्यक्तिगत प्रभाव प्राप्त करने के लिए संपन्न परिवारों ने स्वतंत्रता के बाद समाचार पत्र जारी किए। उन्हें सरकारी समर्थन और सहायता दी गई क्योंकि उनके पास समाचार पत्र उद्योग के मानकों को ऊपर उठाने के लिए पर्याप्त धन था। परिवार के स्वामित्व वाले समाचार पत्रों में सबसे सफल, मलयालम मनोरमा और द हिंदू ने पत्रकारिता के क्षेत्र में मिसाल कायम की थी और साथ ही अपनी पहचान भी बनाई थी। परिवार के स्वामित्व वाले समाचार पत्रों के अन्य उदाहरण हैं: द डेक्कन हेराल्ड, द पंजाब केसरी, द महाराष्ट्र टाइम्स, द नवभारत टाइम्स, द लोकसत्ता, द दैनिक जागरण, राजस्थान पत्रिका, अमर उजाला, सकाल और बार्टमैन।

अंग्रेजी भाषा के समाचार पत्र मुख्य रूप से शहरी राष्ट्रीय दैनिक समाचार पत्र थे, जिनका देशव्यापी प्रसार और कई संस्करण थे और उनके बड़े फाइनेंसर और प्रायोजक थे। सीखने के इच्छुक लोगों द्वारा इन्हें अंग्रेजी भाषा में शिक्षा के माध्यम के रूप में उपयोग किया जाता था, हालांकि आज प्रूफरीडर की कमी ने उनकी व्याकरणिक गुणवत्ता को कम कर दिया है। परंपरागत रूप से, वे क्वीन्स इंग्लिश का अनुसरण करते थे, लेकिन अमेरिकी अंग्रेजी की बढ़ती स्वीकार्यता के साथ, आज एक मिश्रित शैली देखी जाती है। मुख्यधारा में सफलता के लिए अंग्रेजी के ज्ञान पर जोर देने के साथ, ग्रामीण इलाकों में अंग्रेजी माध्यम और अंग्रेजी समाचार पत्रों की एक साथ पहुंच एक उपयोगी शैक्षिक मिश्रण हो सकती है।

हिन्दी राष्ट्रभाषा के रूप में

यह जानना बहुत जरूरी है कि भाषा एक सामाजिक माध्यम है, जिसके जरिए हम एक-दूसरे से संवाद करते हैं। भाषा हमारे सामाजिक अस्तित्व का एक सशक्त माध्यम है। प्रत्येक भाषा लोगों के समूह, उनकी भावनाओं, उनकी जीवन शैली का प्रतिनिधित्व करती है और उन्हें एक साथ जोड़ती है। भारत एक बहुभाषी राष्ट्र है और इसमें विविध संस्कृतियाँ, धर्म और लोग शामिल हैं लेकिन मूल रूप से एकजुट है। ऐतिहासिक रूप से, संस्कृत देश को एकजुट करने के लिए जिम्मेदार थी और अब उसके बाद हिंदी भाषा आती है। पिछले एक हजार वर्षों से हिंदी भारत में संचार की मुख्य भाषा रही है। हिन्दी साहित्य खड़ी बोली की काव्यात्मक अवधारणाओं तक ही सीमित नहीं है। इसमें प्रसाद, पंत, निराला, प्रेमचंद, मुक्तिबोध आदि लेखकों की काव्य अवधारणाओं की एक विशाल विविधता के साथ-साथ तुलसीदास, जायसी, विद्यापति आदि की रचनाएँ भी शामिल हैं। हिंदी साहित्य अवधी, बृज, मैथली भाषाओं पर आधारित है लेकिन मूल रूप से हिंदी साहित्य है। एकीकृत है. हालाँकि हिंदी ने अपनी औपचारिक और तकनीकी शब्दावली संस्कृत से प्राप्त की है, लेकिन हिंदी मुसलमानों के बीच भी बहुत लोकप्रिय थी क्योंकि यह दिल्ली और इसके आस-पास के स्थानों में संचार की मुख्य भाषा थी। मुसलमानों ने दिल्ली में अपना व्यापार बढ़ाने के लिए हिंदी सीखी और इसमें बड़ी संख्या में फ़ारसी, अरबी और तुर्की शब्दों को शामिल किया। जब मुगलों ने दक्षिण एशिया के मध्य, उत्तर और उत्तर-पश्चिमी क्षेत्रों में अपनी विजय का विस्तार किया तो हिंदी ने संपर्क भाषा के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। हिंदी मुगल सेना की आम भाषा बन गई। जल्द ही, दक्षिण एशिया के न्यायालयों में और रईसों के बीच भी फ़ारसी भाषा का स्थान हिंदुस्तानी ने ले लिया।

हिन्दी पत्रकारिता के चरण

इस समय भारत सामाजिक एवं राजनीतिक परिवर्तन का सामना कर रहा था। अंग्रेज भारत पर शासन कर रहे थे और उन्हें भारतीय लोगों

के प्रति कोई सहानुभूति नहीं थी। उन्होंने केवल भारतीय संसाधनों का दोहन करने और अपने राष्ट्रों को धन हस्तांतरित करने पर ध्यान केंद्रित किया। इसके परिणामस्वरूप भारत में आर्थिक मंदी आ गई। भारी शुल्क लगाकर भारतीय निर्यात बंद कर दिया गया और आयात शुल्क मुक्त कर दिया गया। भारत अंग्रेजों के चंगुल में फँसकर बर्बाद हो रहा था। उस समय भारत में ईसाई धर्म का भी प्रचार हो रहा था। ऐसे समय में राजा राम मोहन राय खड़े हुए और उन्होंने हिंदी भाषा प्रेस की मदद से अंग्रेजों के खिलाफ जोरदार आवाज उठाई। उनकी दृढ़ राय, दूरदर्शिता थी और उनके सुधारवादी विचारों ने हिंदी भाषा प्रेस की नींव रखी। जुगल किशोर शुक्ल ने कलकत्ता से हिंदी साप्ताहिक "उदहंड मार्तंड" शुरू किया, जो बहुत लोकप्रिय हुआ लेकिन जल्द ही 1827 में वित्तीय तनाव के कारण इसे बंद करना पड़ा। शुक्ल ने हिंदी पत्रकारिता के अग्रदूतों में से एक होने की प्रतिष्ठा अर्जित की। फिर 1829 में, बंगदूत की शुरुआत राजा राम मोहन राय ने की थी। यह एक साप्ताहिक समाचार पत्र था, जो चार भाषाओं अंग्रेजी, बांग्ला, फ्रेंच और हिंदी में प्रकाशित होता था। इसके संपादक नील रतम हलदर थे। यह रॉय के विचारों और विचारों के प्रचार-प्रसार का माध्यम था और इसका उद्देश्य रूढ़िवादिता, सामाजिक कुरीतियों और कट्टरता पर हमला करना था। 1845 में, काशी से एक और हिंदी भाषा का समाचार पत्र, बनारस अख़बार, गोविंद रघुनाथ थट्टे के संपादन में शुरू किया गया था। वह राजा शिव प्रसाद के संरक्षक थे। इसमें स्थानीय समाचार और कानून पर संस्कृत पुस्तकों के अनुवाद शामिल थे। राजा शिव प्रसाद ने एक सामान्य भाषा के विकास पर जोर दिया, जिसमें फ़ारसी, उर्दू और हिंदी के लोकप्रिय शब्द शामिल हो सकें। इस अखबार का प्रसार पढ़े-लिखे हिंदी पाठकों तक ही सीमित था और इसके 44 ग्राहक थे। 1846 में मार्तंड, हिंदी, उर्दू, बंगाली, फ़ारसी और अंग्रेजी - सभी एक ही अंक में, प्रत्येक पाँच स्तंभों में, मौलवी नसीरुद्दीन द्वारा शुरू और संपादित किया गया था।

1848 में मध्य प्रदेश से मालवा अख़बार की शुरुआत प्रेम नारायण ने की थी। पुनः 1850 में जुगल किशोर शुक्ल द्वारा एक और प्रयास किया गया। उन्होंने एक समाचार पत्र 'समतंड मार्तंड' शुरू किया। यह कलकत्ता का एक साप्ताहिक समाचार पत्र था। 1850 में, एक और समाचार पत्र, सुधाकर, शुरू किया गया था। इसके संपादक नारा मोहन मित्र थे। यह एक द्विभाषी समाचार पत्र था और इसमें प्रयुक्त भाषा खड़ी बोली थी। हिंदी, अंग्रेजी और उर्दू के विद्वान मुंशी सदा सुखलाल ने 1852 में आगरा से बुद्धि प्रकाश निकाला। उनकी अपनी प्रेस थी। सदा सुखलाल के लेखन और विषय चयन में नवीनता थी। उन्होंने अपने लेखन को आधुनिक दृष्टिकोण दिया। 1854 हिंदी पत्रकारिता के लिए एक महत्वपूर्ण वर्ष था।

कलकत्ता से पहला हिंदी दैनिक, "समाचार सुधा वर्षण" श्याम सुंदर सेन के संपादन में शुरू किया गया था। यह एक द्विभाषी समाचार पत्र था और इसमें एक पृष्ठ हिंदी में और दूसरा बंगाली में प्रकाशित होता था। यह 14 वर्षों तक प्रकाशित हुआ। उस समय तक हिन्दी भाषा के समाचार पत्र कलकत्ता, बंगाल और आगरा में बहुत लोकप्रिय हो गये थे।

दैनिक जागरण

1926 में पूरनचंद गुप्ता ने कानपुर की "हिन्दी सम्प्रदाय" नामक प्रसिद्ध संस्था का गठन किया। यह संगठन भारतीय स्वतंत्रता के क्रांतिकारी आंदोलन का समर्थक था। उस समय प्रताप अखबार में कार्यरत जगदीश चंद्र कुलसिया भी इसके सदस्य थे। कुलसिया और गुप्ता दोनों ने मिलकर 1939 में एक साप्ताहिक हिंदी अखबार "स्वतंत्र" शुरू किया और एक साल के भीतर इसे झाँसी में स्थानांतरित कर दिया गया। बाद में इसे दैनिक समाचार पत्र बना दिया गया और इसका नाम बदलकर दैनिक जागरण कर दिया गया। फिर, इसे कानपुर में स्थानांतरित कर दिया गया और 21 सितंबर, 1947 को इसका प्रकाशन शुरू हुआ। जल्द ही, इसे भारत के समाचार पत्रों के रजिस्ट्रार के साथ पंजीकृत किया गया। गुप्ता एबीसी (ऑडिट ब्यूरो ऑफ सर्कुलेशन) और आईईएनएस (इंडियन ईस्टर्न न्यूजपेपर सोसाइटी) के सदस्य भी बने और अखबार उद्योग में अपना नाम बनाया। उनके अखबार ने हिंदू राष्ट्रवाद को प्रचारित किया और पाकिस्तान से आए शरणार्थियों की कहानियों को बड़े पैमाने पर कवर किया। पूरन चंद्र गुप्ता ने जिस सत्य की परंपरा का समर्थन किया, उसे नरेंद्र मोहन जैसे साहित्यिक दिग्गजों ने आगे बढ़ाया, जो अखबार के संपादकीय कर्णधार थे। जागरण के दृष्टिकोण को मजबूत करने के अलावा, उन्होंने उत्पाद को आधुनिक दृष्टिकोण से भर दिया, जिससे अखबार और उसके पाठकों के बीच गहन संपर्क बना। कानपुर में अखबार की स्थापना के बाद इसका दूसरा संस्करण गोरखपुर से शुरू किया गया, जहां इसे अच्छा रिस्पॉन्स मिला। 1975 में आपातकाल के समय, दैनिक जागरण ने विरोध में अपने संपादकीय पन्ने खाली छोड़ दिए और परिणामस्वरूप इसके मालिकों को जेल में डाल दिया गया। जब मीडिया पर सेंसरशिप लगाई गई तो दैनिक जागरण ने अपनी छवि एक निडर, निर्भीक और निष्पक्ष योद्धा के रूप में छापी। आज की लॉन्चिंग कानपुर में हुई और इसने जागरण को कड़ी टक्कर दी। जागरण कानपुर में अपने अधिकतम विस्तार पर पहुँच गया था और अन्य राज्यों में विस्तार की तलाश में था। जागरण ने अपने क्षितिज का विस्तार किया और लखनऊ, इलाहाबाद (1979), वाराणसी, मेरठ (1984), आगरा (1986), और बरेली (1989) और अंततः 1990 में दिल्ली तक अपने संस्करण लॉन्च किए। 1997 और 2006 के

बीच, दैनिक जागरण ने अपना विस्तार किया। देहरादून, जालंधर, हिसार, पटना, मोरादाबाद, अलीगढ, रांची, जमशेदपुर, धनबाद, भागलपुर, पानीपत, हलद्वानी, लुधियाना, मुजफ्फरपुर, जम्मू, धर्मशाला, इंदौर में एक-एक अठारह नये संस्करण जोड़े जा रहे हैं। वर्तमान में जागरण के 37 मुख्य संस्करण हैं। यह वास्तव में 200 से अधिक उप-संस्करण तैयार करता है जो हर विशिष्ट बाजार की बोलचाल की पसंद के अनुकूल होते हैं। 2007 के दौरान, याहू के साथ एक रणनीतिक गठबंधन के माध्यम से, jagran.com को एक सह-ब्रांडेड साइट, www.jagran.yahoo.com के रूप में लॉन्च किया गया था। इस साइट पर प्रति दिन दस लाख से अधिक पृष्ठ दृश्य ट्रैफ़िक है।

अमर उजाला

अमर उजाला को 18 अप्रैल, 1948 को आगरा से चार पेज के समाचार पत्र के रूप में लॉन्च किया गया था, जिसका उद्देश्य सामाजिक जागृति को बढ़ावा देना और हाल ही में स्वतंत्र भारत के नागरिकों के बीच जिम्मेदारी की भावना पैदा करना था। इन उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए जो प्रकाशकों ने अपने लिए निर्धारित किए थे, जिस तरह की खबरें प्रकाशित की गईं वे मूल रूप से राजनीतिक और सामाजिक मुद्दों और अपराध के इर्द-गिर्द घूमती थीं। एक मामूली शुरुआत के साथ, 20 साल बाद अमर उजाला ने 20,000 प्रतियों का प्रसार हासिल किया और पश्चिमी उत्तर प्रदेश के 14 जिलों में सेवा दे रहा था। धीरे-धीरे, लेकिन लगातार बढ़ते हुए, सदी के अंत में अमर उजाला भारत के शीर्ष 3 दैनिक समाचार पत्रों में से एक बन गया। अखबार न केवल पश्चिमी उत्तर प्रदेश की बाधाओं को पार कर पूरे राज्य में फैल गया है, बल्कि अन्य पड़ोसी राज्यों में भी पहुंच गया है। अमर उजाला अब चंडीगढ़, पंजाब, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, जम्मू और कश्मीर, उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड और दिल्ली में भी एक प्रमुख समाचार पत्र है। वर्तमान में, अमर उजाला प्रत्येक संस्करण में अधिक रंगीन पृष्ठों के साथ 18 पेज का दैनिक अंक प्रकाशित करता है। इसके अलावा, अमर उजाला ने पाठकों के लिए चार रंगीन पत्रिकाएं भी पेश की हैं।

एक। उड़ान - प्रत्येक बुधवार को युवाओं के लिए एक साप्ताहिक कैरियर पत्रिका।

बी। रूपायन - आपकी पर्सनल फ्रेंड: हर शुक्रवार को महिलाओं के लिए एक बिल्कुल नई साप्ताहिक पत्रिका।

सी। जिंदगी लाइव - बोले टू डायरेक्ट बॉलीवुड से: हर रविवार को एक बिल्कुल नए लुक वाली फिल्म पत्रिका।

दैनिक भास्कर

दैनिक भास्कर का प्रकाशन सबसे पहले मध्य प्रांत के भोपाल और ग्वालियर में हुआ। वर्ष 1956 में हिंदी भाषा के दैनिक अखबार की आवश्यकता को पूरा करने के लिए भोपाल में सुबह सवेरे और वर्ष 1957 में ग्वालियर में गुड मॉर्निंग इंडिया नाम से समाचार पत्र शुरू किया

गया था, इसका नाम बदलकर भास्कर समाचार कर दिया गया। 1958 में, इसका नाम बदलकर दैनिक भास्कर कर दिया गया। जबकि प्रमुख हिंदी भाषा के समाचार पत्र हिंदी अंधराष्ट्रवादी ताकतों के समर्थक माने जाते हैं और इस दौरान गैर-जिम्मेदार और पक्षपातपूर्ण रिपोर्टिंग में लगे हुए हैं, दैनिक भास्कर ने अपनी विश्वसनीयता बनाए रखी और अपने विस्तार पर ध्यान केंद्रित किया। 1992 तक दैनिक भास्कर ने स्वयं को मध्य प्रदेश में स्थापित कर लिया। 6 दिसंबर 1992 को बाबरी मस्जिद के विध्वंस के बाद भोपाल में भड़के सांप्रदायिक दंगों के मद्देनजर दैनिक भास्कर ने लोगों से शांति बनाए रखने की अपील की है। अखबार ने राम जन्म भूमि मस्जिद विवाद के दौरान अन्य हिंदी समाचार पत्रों के विपरीत एक उदार और धर्मनिरपेक्ष दृष्टिकोण बनाए रखा और अपने मुस्लिम पाठकों को बनाए रखने में सक्षम रहा, जो भोपाल में लगभग 40% है। इसका प्रकाशन अमृतसर और जालंधर से शुरू हुआ और मुख्य कार्यालय इन्हीं दो शहरों में स्थित था। अखबार के प्री-लॉन्चिंग प्रयास छह महीने पहले ही शुरू कर दिए गए थे, जिसमें पूरे शहर (जालंधर) में कई होर्डिंग्स लगाए गए थे और प्रत्येक होर्डिंग में "पंजाब को चाहिए जवाब" शीर्षक के साथ एक प्रश्न उठाया गया था और इससे संबंधित महत्वपूर्ण प्रश्न उठाए गए थे। पंजाब के मुख्य मुद्दे.

दैनिक भास्कर ने पंजाब के बौद्धिक रूप से प्रेरित लोगों पर फोकस किया। दिलचस्प पहलू यह था कि होर्डिंग्स पर अखबार का नाम नहीं था, जिससे आम लोगों में इन साइनबोर्डों के स्रोत के बारे में जिज्ञासा पैदा हो गई। एक महीने बाद साइनबोर्ड बदल दिए गए और नए सवाल खड़े कर दिए गए. इस बार सवालों के नीचे अखबार का नाम लिखा हुआ था. इससे अखबार में आम लोगों की दिलचस्पी बढ़ी और पाठक संख्या बढ़ाने में मदद मिली। यह अखबार की मार्केटिंग रणनीति थी जिसे लोगों ने सराहा। अखबार ने यह संबंध स्थापित करने की कोशिश की कि इससे पंजाब के लोगों की समस्याओं को उठाने में मदद मिलेगी। प्री लॉन्च सर्वे, कूपन स्कीम, कम दरों पर वार्षिक सदस्यता जैसी रणनीतियों को अपनाकर दैनिक भास्कर ने अखबार के लिए साख बनाई और इसके प्रसार को बढ़ाने में सफल रहा। दैनिक भास्कर ने लॉन्च के बाद के प्रयासों पर भी ध्यान केंद्रित किया और पंजाब के सभी शहरों में लॉन्च से पहले उठाए गए सवालों के जवाब देते हुए फिर से होर्डिंग्स लगाए। ऐसा लोगों को यह बताने के लिए किया गया था कि अखबार अपने पाठक द्वारा अपेक्षित जानकारी के हर पहलू को सफलतापूर्वक कवर कर रहा है, चाहे वह खेल, राजनीति या व्यवसाय से संबंधित हो। दैनिक भास्कर ने 27 जून 2008 को हिंदी का पहला बिजनेस दैनिक बिजनेस भास्कर लॉन्च किया। 2011 तक,

बिजनेस भास्कर हिंदी भाषा का सबसे बड़ा बिजनेस दैनिक है और इसके नौ संस्करण (दिल्ली, भोपाल, इंदौर, रायपुर, पानीपत, जालंधर, लुधियाना) हैं। , चंडीगढ़ और जयपुर)। यतीश के राजावत इसके संस्थापक संपादक हैं। इसके राष्ट्रीय संपादक श्रवण गर्ग हैं।

दैनिक भास्कर विभिन्न देशों के सफल समाचार पत्रों से सीखने और उनके दृष्टिकोण को अपनाने के लिए तैयार है। सफल समाचार पत्रों पर शोध करने और उनकी रणनीतियों को अपनाने में ऊर्जा निवेश करने के इसके दृष्टिकोण ने अखबार को दैनिक समाचार पत्रों की श्रेणी में अग्रणी बनने में मदद की है। दैनिक भास्कर की सफलता से हिंदी जनता का यह विश्वास बढ़ा है कि हिंदी अखबारों की सामग्री देशी रूप में पुनर्पैकेजित अंग्रेजी समकक्षों से कम नहीं है। हिंदी समाचार पत्रों ने 1980 के दशक में नवीनतम संचार प्रौद्योगिकियों की मदद से स्थानीयकरण की प्रक्रिया अपनाई और इससे उत्पादन, वितरण और उपभोग का विकेंद्रीकरण हुआ। यह 1990 के दशक में आर्थिक सुधारों और भारतीय अर्थव्यवस्था के तेजी से उभरते वैश्वीकरण की शुरुआत थी, स्थानीयकरण की प्रक्रिया तेज हो गई।

पंजाब केसरी

पंजाब केसरी देश का एक प्रसिद्ध राष्ट्रीय समाचार पत्र है, जो छह क्षेत्रों पंजाब, चंडीगढ़, हिमाचल प्रदेश, उत्तर प्रदेश, राजस्थान और हरियाणा से प्रकाशित होता है। इसकी शुरुआत 1965 में लेफ्टिनेंट लाला जगत नारायण जी ने की थी। नारायण लाहौर से शरणार्थी के रूप में जालंधर आए थे और 1948 में एक उर्दू दैनिक, हिंद समाचार शुरू किया था। उर्दू, तब, पंजाब के वेतनभोगी शहरी पुरुषों की भाषा थी। जो लोग अखबार के लिए समय और पैसा खर्च कर सकते थे। लेकिन स्वतंत्र भारत में उर्दू को सरकारी समर्थन का अभाव था। पंजाब के स्कूलों में पंजाबी और हिंदी भाषाएँ बन गईं और गुरुमुखी और देवनागरी शिक्षा की लिपि बन गईं। 1965 में, जगत नारायण ने एक हिंदी दैनिक पंजाब केसरी की स्थापना की। हिंद समाचार समूह पंजाबी में जग बानी, हिंदी में पंजाब केसरी और उर्दू में हिंद समाचार प्रकाशित करता है।

स्वतंत्रता के बाद की पत्रकारिता

स्वतंत्रता के समय भारतीय प्रेस एकीकृत नहीं थी। वस्तुतः सभी भाषाओं के सभी समाचार-पत्रों ने अपने-अपने दृष्टिकोण के अनुसार स्वतंत्रता संग्राम को अपनाया था। आमतौर पर आजादी के तुरंत बाद अखबारों में भारत और पाकिस्तान के विभाजन की खबरें, शरणार्थियों पर लेख, महात्मा गांधी, भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की गतिविधियां और नेता और भारतीय अर्थव्यवस्था के सामने आने वाली कई आर्थिक-सामाजिक समस्याएं प्रमुखता से छपती थीं। स्वतंत्रता के आगमन के साथ, भारत ने लोकतंत्र को बहाल करने, सीमा पार

शरणार्थियों और अन्य बहुमुखी मुद्दों के साथ समायोजन करने का निर्णय लिया। इस समय समाचार पत्रों को बदलते समय के साथ तालमेल बिठाने में कठिनाई हो रही थी। फिर महात्मा गांधी की हत्या ने देश को झकझोर दिया और नेहरू सरकार के सामने नई चुनौतियां खड़ी हो गईं। कांग्रेस सरकार ने अर्थव्यवस्था और भारतीय लोगों पर पूर्ण नियंत्रण करके देश को एकजुट करना शुरू कर दिया। समाचार पत्रों ने केंद्र में कांग्रेस सरकार के कामकाज के प्रहरी की अपनी नई भूमिका निभानी शुरू कर दी और विकास संबंधी मुद्दों और नीतियों का विश्लेषण प्रदान करना शुरू कर दिया। फिर 1950 में संविधान बनाया गया, पत्रकारों के लिए नए वेतन बोर्ड बनाए गए, प्रेस आयोग का गठन किया गया, वर्किंग जर्नलिस्ट एक्ट जैसे विभिन्न अधिनियम बनाए गए आदि। वास्तव में, भारतीय पत्रकारिता के मानकों को नेहरू सरकार द्वारा कम किया गया था। जवाहर लाल नेहरू मीडिया के कट्टर समर्थक थे और उनका मानना था कि मीडिया राष्ट्र निर्माण गतिविधियों में बहुत रचनात्मक भूमिका निभा सकता है। फिर धीरे-धीरे, समाचार पत्र संगठनों ने अपने अस्तित्व के लिए विज्ञापन राजस्व पर ध्यान देना शुरू कर दिया। आपातकाल भारतीय प्रेस की साख और अस्तित्व पर बड़ा आघात था। उसके बाद के समाचार पत्र अधिक व्यावसायिक हो गए और पत्रकारिता की नैतिकता को झुकाना शुरू कर दिया। जिन समाचार पत्रों ने व्यावसायीकरण की इस प्रवृत्ति का पालन नहीं किया वे बढ़ते खर्चों के कारण अल्पमत में आ गए या बंद हो गए।

निष्कर्ष

समाचार पत्र का प्रभाव किसी व्यक्ति के भौतिक जीवन पर न पड़कर उसके वैचारिक जीवन पर भी पड़ता है तथा बहुतायत में डाला गया इस प्रकार का असर समाज एवं राष्ट्र की चेतना को आंशिक रूप से या पूरी तरह प्रभावित कर डालता है अथवा बदल देता है। समाज का यह बदलाव पुनः समाचार पत्र को प्रभावित करता है और उसे अपनी कार्य प्रणाली नए रूप में विकसित करने को बाध्य कर देता है। इस प्रकार एक-दूसरे को प्रभावित करने की यह दोहरी प्रक्रिया मानव सभ्यता के विकास के साथ चलती रहती है जो कि समाज का समाचार पत्र पर निर्भरता या समाचार पत्र पर समाज के प्रभाव और सम्बन्ध को स्पष्ट करता है। हिंदी मीडिया काफी समय से नुकसान झेल रहा है और विभिन्न कारणों से उसे इसका लाभ नहीं मिल रहा है। 1990 के बाद ही वैश्वीकरण के साथ हिंदी का पुनरुद्धार होना शुरू हुआ आधुनिक भारत एक बहुभाषी राष्ट्र है। भारतीय संविधान द्वारा आधिकारिक भाषा के रूप में अपनाए जाने के बाद से हिंदी ने एक लंबा सफर तय किया है। इसे भारत

में राष्ट्रीय भाषा के रूप में मान्यता प्राप्त है और यह क्षेत्रीय भाषा बोलने वाले लोगों को भी जोड़ती है। समाज के विकास में भाषा महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। जबकि समाज परिवर्तन से गुजरता है, वैसे ही भाषा भी, अपने लोकप्रिय और शुद्धतम रूप में, परिवर्तन से गुजरती है। बाजार अर्थव्यवस्था के स्पर्श से भारत का भाषाई परिदृश्य भी अछूता नहीं रहा है और हिंदी समाचार पत्रों ने इसमें महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

बहरी, एच. (2002)। राजपाल पॉकेट हिंदी शब्दकोश। राजपाल एंड संस, नई दिल्ली।

भास्कर, बी.आर.पी. भाषा प्रेस को समझना. फ्रंटलाइन, 2 मार्च 2001।

भट्टाचार्जी. अरुण. द इंडियन प्रेस: प्रोफेशन टू इंडस्ट्री। विकास प्रकाशन. 1972 नई दिल्ली।

बालन, के.आर. और रायडू. सी.एस. प्रभावी संचार। बीकन पुस्तकें। नई दिल्ली।

चतुर्वेदी, एम. (1970)। एक व्यावहारिक हिन्दी-अंग्रेजी शब्दकोश। नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली।

चक्रवर्ती, सुहास. प्रेस और मीडिया- वैश्विक आयाम। कनिष्क प्रकाशक। नई दिल्ली।

चतुवेर्दी, प्रसाद जगदीश. हिंदी पत्रकारिता का इतिहास। प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली।

चटर्जी, पी.सी. भारत में प्रसारण. ऋषि प्रकाशन। नई दिल्ली।

चतुवेर्दी, एम. एवं तिवारी। बी.एन. (सं.). (1996)। एक व्यावहारिक हिन्दी-अंग्रेजी शब्दकोश। नेशनल पब्लिशिंग हाउस। नई दिल्ली।

डैश अजय. प्रेस की स्वतंत्रता। डिस्कवरी पब्लिशिंग हाउस। नई दिल्ली।

डिफ्लूर, मेल्विन एल. और डेनिस। एवरेट ई. जनसंचार को समझना। बोस्टन: हॉटन मिफिन कंपनी। 1991.

देसाई, अमित. पत्रकारिता एवं जनसंचार. संदर्भ प्रेस.

डेविटो, जोसेफ ए. संचार। संकल्पना और प्रक्रिया. प्रिटिस हॉल, न्यू जर्सी।

डे, प्रदीप कुमार. जनसंचार पर परिप्रेक्ष्य. हर आनंद प्रकाशन। 1994. नई दिल्ली.

धर्मेंद्र, आर. बी. हिंदी पत्रकारिता में संवेदना और पीड़ा प्रभाव। अयान प्रकाशन, नई दिल्ली।

फ्रीडलैंडर, पी. जेफरी। आर. एवं सेठ, एस. (2001)। अचेतन आरोप: हिंदीभाषा समाचार पत्र का विस्तार भारत को कैसे प्रभावित करता है। मीडिया इंटरनेशनल ऑस्ट्रेलिया। क्रमांक 100-अगस्त 2001. 147-165.

जे, टी. (1884) उर्दू का एक शब्दकोश. शास्त्रीय हिन्दी. और अंग्रेजी। डब्ल्यू.एच. एलन एंड कंपनी लंदन।

मूर्ति. एन. कृष्णा. भारत पत्रकारिता. मैसूर: प्रसारंगा. मैसूर विश्वविद्यालय. 1996.

नायपॉल, वी.एस. भारत: अब एक लाख विद्रोह। मिनर्वा. 1990. लंदन.

नटराजन, जे. भारतीय पत्रकारिता का इतिहास। टाटा आर्ट प्रेस. नई दिल्ली।

नटराजन, एस.ए. भारत में प्रेस का इतिहास। एशिया पब्लिशिंग हाउस। 1962. न्यूयॉर्क.

चॉम्स्की, नाओम द कॉमन गुड। ओडॉन्टन प्रेस। 1998.

नेहरू, जवाहरलाल. भारत की खोज. ऑक्सफोर्ड यूनिवरसिटि प्रेस। 1982. नई दिल्ली.

निनियन, एस. (2007). हार्टलैंड से सुर्खियाँ। ऋषि प्रकाशन। नई दिल्ली।

नरूला, उमा. जनसंचार - सिद्धांत और व्यवहार। हर आनंद प्रकाशन। 1994. नई दिल्ली.

ओल्डेनबर्ग, फिलिप। (1997-2007) एनकार्टा इनसाइक्लोपीडिया "भारत: आधिकारिक भाषाएँ।"

पंत, सी. एन. जोशी कुमार मनोज, कुमार जीतेन्द्र। हिंदी पत्रकारिता की रूप रेखा। (1995)। कनिष्क पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर। नई दिल्ली।